अध्याय उन्नीस

महत्वपूर्ण स्थान*

अकबरपुर (परगना लहरपुर, तहसील सीतापुर) :—यह एक बहुत महत्वपूर्ण गांव है, जो 27°40′ अक्षांश उत्तर तथा 80°56′ देशान्तर पूर्व में स्थित है और बिसवां से लहरपुर जाने वाली कच्ची सड़क पर, बिसवां से बारह मील तथा लहरपुर से चार मील की दूरी पर तथा पूर्वोत्तर रेलवे की सीतापुर से बुढ़वल जाने वाली लाइन के परसेंडी स्टेशन से लगभग सात मील उत्तर-पूर्व में पड़ता है।

इस स्थान के प्राचीन इतिहास के संबंध में इसके सिवाय कुछ भी पता नहीं चलता कि इस पर कई पीढ़ियों तक बहमन गौड़ राजपूतों का राज्य रहा और उन्हीं में से एक महाबली सिंह थे, जो नवाब शुजाउद्दौला के शासन काल में उनके विरुद्ध होने वाले कुछ उपद्रवों में शामिल हुए थे जिसके फलस्वरूप उन्हें अपना राज्य खोना पड़ा था। किन्तु यह राज्य उन्हें इस शर्त पर पुनः वापस लौटा दिया गया कि वे इस्लाम मजहब को कबूल कर लें और उन्होंने इस मजहब को अपना लिया था। इस गांव के दक्षिण में कुछ दूर पर सूरजकुंड नामक एक पक्का तालाब स्थित है जिसके किनारों पर कुछ प्राचीन मंदिर हैं। यहां पर ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी, कार्तिक पूर्णिमा, प्रत्येक अमावस्या और प्रत्येक रविवार को मेले लगते हैं, जिनमें संपूर्ण वर्ष में लगभग दस हजार व्यक्तियों की भीड़ एकत्रित होती है। इसके दक्षिण की ओर लगभग एक मील की दूरी पर एक स्थान (जो लगभग सात एकड़ भूमि में फैला हुआ है) ऐसा है जहां अभी तक खोज नहीं की जा सकी है। यह लगभग पन्द्रह फुट ऊंचा है और यहां पर प्राचीन लाल मिट्टी के बरतनों के टुकड़े पाये गये हैं।

इस गांव की जनसंख्या 1,585 है और इसकी भूमि का क्षेत्र (जिसका भू-राजस्व 7,667 रुपये है) 1,345 एकड़ है जिसमें से 1,112 एकड़ भूमि में खेती की जाती है। यहां पर सिंचाई मुख्य रूप से नहरों, तालाबों और कुओं से की जाती है। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये यहां स्थायी रूप से दुकानें हैं। इसके अलावा यहां पर मंगलवार और शनिवार को सप्ताह में दो बार बाजारें भी लगती हैं।

इस गांव में एक शाखा डाक-घर है तथा यहां एक अवर माध्यमिक विद्यालय, एक प्राथमिक विद्यालय तथा शिक्षा विभाग द्वारा संचालित एक वाचनालय भी है।

आंट (परगना और तहसील मिसरिख) :—27°26′ अक्षांश उत्तर तथा 80°29′ देशान्तर पूर्व में स्थित आंट एक बड़ा गांव है। यह गांव मिसरिख के लगभग चार मील पश्चिम में है और यह उत्तर-पश्चिम में पिसावां और चन्द्रा को जाने वाली सड़क की एक छोटी कच्ची शाखा द्वारा उससे जुड़ा हुआ है। इस गांव के दक्षिण में लगभग एक मील की दूरी पर पटौंजा है जहां पर एक भग्न किला है, जो वर्ष 1670 ई० के लगभग बहादुर बेग के नेतृत्व में मुसलमानों द्वारा खाली कराये जाने के समय तक अहबन राजपूतों का मुख्य गढ़ था।

आंट की जनसंख्या 2,756 है तथा इसकी भूमि (जिसका राजस्व 7,289 रु० निर्धारित किया गया है) 1,172 एकड़ है, जिसमें से 980 एकड़ भूमि में खेती की जाती है। यहां पर एक बाजार है जिसमें रविवार, सोमवार और शुक्रवार को सप्ताह में तीन दिन दुकानें लगती हैं। इस गांव में दो प्राथमिक विद्यालय हैं जिनमें से एक लड़कों का है तथा दूसरा लड़कियों का है, इसके अलावा यहां एक शाखा डाक-घर और शिक्षा विभाग द्वारा संचालित एक पुस्तकालय भी है।

औरंगाबाद (परगना औरंगाबाद तहसील मिसरिख) :—यह एक बहुत बड़ा गांव है जो 27°21′ अक्षांश उत्तर तथा 80°33′ देशान्तर पूर्व में इस परगने के पूर्वी किनारे पर स्थित है और इस गांव के नाम पर ही इस परगने का नाम भी रख दिया गया है। यह गोमती नदी के तीन मील पूर्व में तथा नैमिषारण्य रेलवे स्टेशन के (जो उत्तरी रेलवे की बालामऊ-सीतापुर शाखा पर स्थित है), जिससे यह एक कच्ची सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है, चार मील दक्षिण पूर्व में पड़ता है।

यह स्थान मूलतः बालपुर पसऊ नाम से विख्यात था, क्योंकि यह पासियों द्वारा बसाया गया था जिनके बाद यहां पर पंवार राजपूत आ गये। 1670 ई० में औरंगजेब ने अहबनों को हराने के लिये बहादुर बेग को भेजा था और उसकी सेवाओं के लिये वर्तमान मिसरिख तहसील का एक भाग उसे जागीर के रूप में प्रदान कर दिया था। बहादुर बेग

---

*इस अध्याय में दिये गये जनसंख्या संबंधी आंकड़े 1951 की जनगणना पर आधारित हैं तथा भू-राजस्व से संबंधित आंकड़े फसली वर्ष 1366 (जून 1959 को समाप्त होने वाले वर्ष) पर आधारित हैं।